

## यूनिट-4 अस्थि विकलांग बच्चे

- 4.1 प्रस्तावना
- 4.2 उद्देश्य
- 4.3 विकलांगता का अर्थ
- 4.4 विकलांगता के प्रकार
- 4.5 विकलांगता के कारण
- 4.6 अस्थि विकलांगता का अर्थ
- 4.7 अस्थि विकलांगता के प्रकार
- 4.8 अस्थि विकलांगता के कारण
- 4.9 अस्थि विकलांगता के रोकथाम के उपाय
- 4.10 अस्थि विकलांग बच्चों की शिक्षा
- 4.11 संदर्भ ग्रंथ

## अस्थि विकलांग बच्चे

**4.1 प्रस्तावना** — “शारीरिक दुर्बलता सच्ची दुर्बलता नहीं है, बल्कि मानसिक दुर्बलता ही सच्ची दुर्बलता है।” महात्मा गांधी ने इन शब्दों को शारीरिक विकलांगता से युक्त लुईब्रेल तथा हेलन किलर की प्रतिभा को देखकर कहा था विकलांग लोगों की आंतरिक शक्तियां इसकी प्रबल होती है कि यह मानसिक एवं कार्यक्षमता की दृष्टि से एक साधारण मनुष्य से अधिक शक्तिशाली होते हैं, यदि ऐसे बच्चों को साधन व सहयोग मिल जाये तो यह समाज पर बोझ नहीं बल्कि सहयोगी सिद्ध होंगे। अस्थि विकलांगता एक असंतुलन की स्थिति है, जो कि बालक के व्यवहार को प्रभावित कर उसे सामान्य बालक से अलग करती है आइए हम इस यूनिट के माध्यम से विकलांगता का अर्थ विकलांगता के प्रकार, विकलांगता की पहचान करना और विकलांगता से कैसे बचा जा सकता है जानेगे तथा अस्थि विकलांगता के दोष तथा कारणों एवं अस्थि विकलांग बच्चों के लिए शैक्षिक प्रावधान क्या है समझ सकेंगे। विकलांग बच्चों की शैक्षिक समस्या को हम कैसे दूर कर सकते हैं उनके सामाजिक समायोजन में हम किस प्रकार सहयोगी बन सकते हैं तथा उन्हें समाज की मुख्य धारा से कैसे जोड़ सकते हैं जिससे उनमें हीन भावना का विकास न होकर वह आपके जीवन को सरल तथा सुचारु रूप से चला सकें और समाज में अपना उचित स्थान प्राप्त कर सकें। अस्थि विकलांगता का प्रभाव बालक के दैनिक जीवन के कार्यकलापों पर सामाजिक जीवन पर मानसिक स्थिति पर एवं भावनात्मक स्तर को भी प्रभावित करता है, किन्तु यदि हम ऐसे बालकों को मानसिक रूप से सबल बनाते हैं तो वह बालक आसानी से अपने जीवन को सुचारु रूप से चला सकने में समर्थ होंगे।

### 4.2 उद्देश्य—

1. विद्यार्थी विकलांगता के अर्थ को समझ सकेंगे।
2. विद्यार्थी विकलांगता के प्रकार को समझ सकेंगे।

3. विद्यार्थी अस्थि विकलांगता का अर्थ एवं प्रकार तथा कारणों को समझ सकेंगे।
4. अस्थि विकलांगता के लक्षण क्या है, तथा इसकी रोकथाम कैसे संभव है ज्ञात कर सकेंगे।
5. अस्थि विकलांग बच्चों के लिए शासन द्वारा प्रदत्त शैक्षिक प्रावधान कौन-कौन से हैं जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

**4.3 विकलांगता का अर्थ—** वह व्यक्ति अथवा छात्र जो शरीर में अंगों के होते हुए भी सामान्य रूप से इन अंगों से अपने कार्य नहीं कर पाता है विकलांग कहलाता है। यह विकलांगता जन्मजात भी हो सकती है अथवा बाद की स्थिति में जैसे माता पिता की अज्ञानता, दुर्घटनाओं अथवा कभी-कभी प्राकृतिक आपदाओं के कारण हो जाती है। ऐसे विकलांग कुछ सुविधाओं के मिलने पर अपना कार्य सामान्य तौर पर कुछ हद तक करने लगते हैं, ऐसे बच्चे निःशक्त नहीं कहे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए बिना पैर के व्यक्ति जब अपना कार्य ठीक से करना है तो विकलांग नहीं कहा जा सकता, परन्तु जब उसका नियोक्ता अर्थात् उसकी शारीरिक बनावट उसे अन्यो से विभेद करता है तो उसे असमर्थता कहेंगे, उसी प्रकार एक कृत्रिम पैर होने पर भी बालक नृत्य करता है तो उसकी अक्षमता को असमर्थता नहीं कहा जा सकता। वह बालक जिसका शारीरिक दोष उसे साधारण क्रियाओं में भाग लेने से रोकता है अथवा सीमित रखता है, शारीरिक अक्षमता से युक्त बालक कहा जाता है।

विकलांगता या अक्षमता के कारण व्यक्ति का कार्य या शिक्षा प्रभावित होती है तो वह विकलांगता कहलाती है। बालक की असमर्थता के कारण वह अपनी आयु लिंग व सामाजिक भागीदारी के अन्तर्गत एक या एक से अधिक क्रियाओं को न कर पाने में कठिनाई को विकलांगता कहते हैं। दो दशक पहले तक अक्षम व्यक्ति अर्थात् अपना कार्य ठीक से न कर सकने वाले को असमर्थ भी कहा जाता था। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार अक्षमता के

कारण—सामाजिक या आर्थिक हानि असमर्थता कहलाती है विकलांगता एक ऐसी स्थिति है जो किसी भी व्यक्ति को किसी भी अवस्था में उसके सामान्य व्यवहार कार्य करने की शक्ति विचार एवं दैनिक कार्य को न्यूनाधिक प्रभावित कर बालक के शारीरिक, मानसिक सामाजिक व भावात्मक असन्तुलन उत्पन्न करती है जिससे बालक सामान्य व्यवहार नहीं कर पाता है तथा वह अपने आप में अयोग्य महसूस करता है।

पिछले कुछ दशकों में विकलांगता से संबंधित शब्दावलियों में अत्याधिक परिवर्तन आया है, उदाहरण के लिए अंधा व्यक्ति को अंधे या दृष्टिहीन न कहकर दृष्टिबाधित या दृष्टि अक्षम कहने लगे हैं, इसी प्रकार बधिर को श्रवण बाधित अस्थि अक्षमता को गत्यात्मक कहते हैं, कम अक्ल को महामूर्ख तथा जड़ जैसे शब्द अब प्रचलन में नहीं हैं, अब हम मंद, मध्यम गंभीर तथा अति गंभीर जैसे शब्द उपयोग में लाते हैं। शैक्षिक उद्देश्य के लिए मानसिक पिछड़े बच्चों को शिक्षा योग्य, प्रशिक्षण योग्य और गंभीर कहे जाते हैं, प्रत्येक श्रेणी की अपनी विशेषता है।

दिनांक 4 दिसंबर 2004 को संसद में प्रस्ताव रखा गया कि विकलांगों को निःशक्तजन बोला जाये उन्हें विकलांग नहीं कहा जाये।”

**4.4 विकलांगता के प्रकार —** विकलांग व्यक्ति अधिनियम 1995 के अन्तर्गत सात प्रकार की विकलांगता परिभाषित की गई है।

1. अस्थि या गत्यात्मक विकलांगता
2. दृष्टि बाधित या अंधत्व
3. अपर्याप्त दृष्टि
4. श्रवण बाधिता
5. मतिमंदता
6. मानसिक रुग्णता
7. कुष्ठरोग युक्त विकलांगता

क्रियाकलाप —

प्रश्न— विकलांग व्यक्ति अधिनियम के आधार पर कितने प्रकार की विकलांगता है।  
लिखो ?

**4.5 विकलांगता के कारण :—**

प्राकृतिक, जन्मजात व मानवकृत कारणों के आधार पर विकलांगता का वर्गीकरण निम्नानुसार है।

**1— प्राकृतिक**

**2— जन्मजात**

- (i) जन्म से पूर्व प्रभावी कारण
- (ii) जन्म के समय प्रभावी कारण
- (iii) जनानकी व वंशानुगत कारण

**3— मानवकृत**

- (i) निर्धनता के कारण
- (ii) अशिक्षा के कारण
- (iii) दूषित वातावरण के कारण
- (iv) मनोसामाजिक कारण
  - (a) मानसिक कारण
  - (b) आवेगजन्य कारण
- (v) कुपोषण के कारण
- (vi) चिकित्सकीय सुविधा के अभाव के कारण
- (vii) दुर्घटनाओं के कारण
  - (a) मार्ग दुर्घटनाएं
  - (b) रेल दुर्घटनाएं
  - (c) हवाई दुर्घटनाएं
  - (d) मिलों की दुर्घटनाएं
  - (e) घरेलू दुर्घटनाएं
- (viii) प्रदूषण के कारण

- (a) वायु प्रदूषण
- (b) जल प्रदूषण
- (c) ध्वनि प्रदूषण
- (ix) राजनैतिक कारण

#### गतिविधि :-

प्रश्न— मानवकृत विकलांगता के कारणों का वर्णन करो।

प्रश्न— दुर्घटनाओं से बचाव के उपाय लिखिए।

**4.6 अस्थि विकलांगता का अर्थ :-** यदि कोई बच्चा अपने हाथ पैर या शरीर के किसी भी अंग को हिलाने—डुलाने में कठिनाई महसूस करता है तो वह अस्थि विकलांगता की श्रेणी में आता है यह कठिनाई अंग विच्छेद के कारण या किसी एक अंग में हाथ पैर कमजोरी— के या लकवाग्रस्त होने के कारण भी हो सकती है। गत्यात्मक विकलांग बालक को चलने फिरने में तथा गति संबंधित कार्य करने में कठिनाई होती है असमर्थता का सामना करना पड़ता है, ऐसे बालकों को विशेष आवश्यकता की जरूरत होती है विश्वस्वास्थ्य संगठन द्वारा बालक के चलने फिरने में कठिनाई को गत्यात्मक असमर्थता कहा है ऐसे बच्चों को शारीरिक रूप से विकलांग या विरूपित की कहा जाता है। ऐसे बालकों की शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कृत्रिम आंगों का उपयोग किया जाता है जिससे कि वे अपने कार्य को आसानी से कर सकें तथा अपना जीवन सुचारु रूप से चला सकें।

अस्थि विकलांग बालक सामान्य बालक की तुलना में शारीरिक सशक्तता में कम होते हैं। ये सामान्य रूप से हो सकने वाले कार्यों में बाधा महसूस करते हैं तथा आसानी से उस कार्य को पूर्ण करने में असमर्थ होती है, शारीरिक कार्य करने की क्षमता इनमें सामान्य बालकों में कुपोषण, बीमारी, पक्षाघात यक्ष्मा, रक्तअल्पता तथा अन्य शारीरिक अक्षमताओं के कारण जीवन शक्ति मन्द होती है यह बच्चे अन्य विकलांगता से ग्रस्त बालकों की तुलना में ज्यादा सजग तथा जागरुक होते हैं तथा अपने जीवन को अनुकूल बनाने के

लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं। इन बालकों के हाथ पैर में ही दोष पाया जाता है जैसे ये ठीक प्रकार से देख तथा सुन सकते हैं जिससे इसका जीवन यापन आसानी से संभव हो सकता है। इन बालकों की योग्यता अनुसार इनका शिक्षा देना संभव होता है जिससे कि ये उसी स्तर पर शिक्षा ग्रहण कर अपने जीवन को आसान और सुगम बना सकने में समर्थ हो सकेंगे तथा अपने जीवन में सरसता सौन्दर्यता तथा अनुकूलन एवं समायोजन कर सकने में सक्षम हो सकेंगे।

अतः समाज का अभिन्न-अंग जानकर हमें इसकी शैक्षिक एवं व्यवसायिक सहायता अवश्य रूप से करनी चाहिए यह हमारा कर्तव्य है तभी अस्थि विकलांगता से युक्त बालकों का जीवन सरल व सुगम बन सकेगा।

### **क्रियाकलाप –**

प्रश्न– अस्थि विकलांगता का अर्थ बताइये।

प्रश्न– शारीरिक विकलांगता कितने प्रकार की होती है।

### **गतिविधि–**

1. अपने आसपास के रोग के गत्यात्मक विकलांग बच्चों की शैक्षिक स्थिति को विस्तार से लिखो।
  2. शासन द्वारा उन्हें कौन-कौन सी सुविधाएँ प्राप्त हैं विस्तृत में लिखो।
- 4.7 अस्थि विकलांगता के प्रकार –** अस्थि विकलांगता बालक या व्यक्ति में निम्न प्रकार से हो सकती है।

1. पंगुता अथवा शारीरिक विकृति – अस्थि विकलांग बच्चों में कुछ शारीरिक अंगों की क्षति हो जाने के कारण हुई विकलांगता को शारीरिक विकृति कहा गया है। शारीरिक विकृति के अन्तर्गत शरीर के किसी भी अंग यानि हाथ पैर का आवश्यकता से कम या ज्यादा विकास हो जाना आता है जिससे कि दैनिक सामान्य कार्यों में बालक को असुविधा का सामना करना पड़ता है तथा जीवन को कठिनाई पूर्ण विकास होता है। पंगुता से तात्पर्य शरीर के उस अंग का पूर्ण विकास नहीं हो पाने से उसमें पूर्णतः गति नहीं आ पाती तथा उसकी

हड्डी इतनी मजबूत नहीं हो पाती जितनी की शरीर की अन्य हड्डियां होती हैं जिससे कि वह भार उठा सके और— दूसरे अंग को सहारा दे सके अतः बालक के किसी भी अंग का आवश्यकता से अधिक कमजोर होना पंगुता कहलाता है। इस प्रकार से अंग का अन्य अंग की तरह विकास नहीं हो पाता यह सामान्य से कुछ विकसित हो पाता है तथा किसी भी कार्य को करने में असमर्थ होता है। इस तरह विकलांगों से ग्रस्त अंग का अन्य उपकरणों की सहायत से चलाया जाता है जिससे बालक के साथ-साथ सामंजस्य स्थापित कर अपने जीवन को सुचारु रूप से गति दे सके एवं समाज की मुख्य धारा में सम्मिलित हो सके अतः हमें गत्यात्मक विकलांगों बच्चों को गति देने हेतु उनको सहयोग प्रदान कर उनका उत्साह वर्धन करना चाहिए उन्हें शासन द्वारा प्रदत्त सभी सुविधाओं का ज्ञान उनके माता-पिता को तथा उन्हें देना चाहिए बदलाना चाहिए कि उनकी विकलांगता उनके लिए किसी भी रोग में आगे बढ़ने के लिए बाध्य नहीं है याने रुकावट नहीं है उन्हें पूर्ण रूप से प्रेरित कर उनको सहयोग कर इस प्रकार के बच्चों को आगे बढ़ाया जा सकता है जिससे कि वे अपना कार्य पूर्ण कर सकें और समाज तथा देश को आगे बढ़ाने में सहयोग प्रदान कर सकें। शासन द्वारा ऐसे बच्चों को ट्रायसिकल तथा उपकरण एवं कृत्रिम अंग प्रदान किए जाते हैं जिसका उपयोग कर वे निरन्तर आगे बढ़ सकते हैं तथा अपना कार्य स्वयं कर सकते हैं। किसी पर आश्रित न रहकर स्वावलम्बी बनने की प्रेरणा उनमें जाग्रत होती है जिससे उनका शारीरिक, मानसिक नैतिक चारित्रिक व बौद्धिक विकास होता है। प्रेरणा तथा दृढ़ निश्चय की भावना का विकास होता है।

2. रोगों से ग्रसित होने के कारण — मनुष्य शरीर में किसी भी गंभीर बीमारी हो जाने के कारण उस अंग को निकालना होता है अतः शरीर के उस हिस्से को अलग कर दिया जाता है ताकि बाकी शरीर में संक्रमण न फैल सके ऐसी स्थिति में भी बालक विकलांगता की श्रेणी में आ जाता है और उसे कृत्रिम अंग का सहारा लेना होता है जिससे वह अपने दैनिक कार्य को पूर्ण कर सके और



अपने जीवन को सुचारु रूप से आगे बढ़ा सके इस हेतु हमारा कर्तव्य है कि हम उसकी समस्या को समझते हुए उसकी ठीक से देखभाल करें और उसकी समस्या का समाधान करते हुए उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करें जिससे वह बालक अपने जीवन रोग ग्रसित होने पर भी आसानी से जीवन यापन कर सके। अगर हम किसी विकलांग बच्चे से मिलते हैं तो वह खुद को भावनात्मक रूप से असुरक्षित समझता है और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने से हिचकता है उन्हें डर लगता है कि पता नहीं लोग उन्हें देखकर क्या सोचेंगे कहीं कोई उनका मजाक न उड़ाए या फिर यदि दिया हुआ काम उनसे नहीं होगा तो क्या होगा इस प्रकार से बच्चे का यह व्यवहार उसके स्वयं के लिए नुकसानदायक होता है क्योंकि वह अपने आप तक सीमित रहता है समाज की अन्य गतिविधियों में भाग नहीं लेता है जिसके साथ उसका पूर्णतः विकास नहीं हो पाता है। इस प्रकार से बच्चा अपना दैनिक जीवन की गतिविधियों में भी समस्या का सामना करता है इसलिए हमें कोशिश करना चाहिए कि हम बच्चे को घुल मिलकर रहना सिखाए तथा उसे अकेले न रहने दें और वह आपने आपको भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस करें तथा स्कूल में भी सभी बच्चों के साथ ताल मेल बिठाए इस प्रकार से हम बच्चों में डर तथा हिचकिचाने की भावना को खत्म कर सकते हैं तथा समाज में इन बच्चों का अपना महत्व है और यह समाज पर बोझ नहीं बल्कि सहायक है बतला सकते हैं व इनको आगे ला सकते हैं।

3. पोलियो माइलिटिस— बचपन में बच्चों को पोलियो की खुराक समय पर ना देने के कारण उनको इस प्रकार की बीमारी से गुजरना पड़ता है तथा उनकी शारीरिक क्षमता पर असर पड़ता है। यह ऐसी बीमारी है जो वायरस संक्रमण के कारण मेरुरज्जु में होती है इससे लकवा या हाथ पैरों तथा मेरुरज्जु की मांसपेशियों की शक्ति का नष्ट होना होता है या कमजोर हो जाती है जिसके कारण बच्चे में विकलांगता आती है और ठीक से वह अपने दैनिक जीवन को नहीं चला पाता है क्योंकि शरीर का मुख्य भाग उसके स्नायुग को शिथिल कर

देता है जिसके कारण उसमें चेतना का अभाव पाया जाता है और बच्चा अपनी सकारात्मक क्रियाकलाप को न करते हुए अपने जीवन को कठिनाई से पूरा करता है।

माता-पिता की छोटी सी लापरवाही का शिकार बच्चा हो जाता है और उसे जीवन भर परेशान होना पड़ता है अतः हमें चाहिए कि नवजात शिशु का टीकाकरण अवश्य करवाये और उसका समय-समय पर पोलियो की खुराक पिलाये जिसके कारण संक्रमण से उसका बचाव हो सके और बच्चा अपना जीवन आसानी से सुगमता से चला सके और उसका भविष्य उज्ज्वल हो इस प्रकार से हम पोलियो से बच्चों को बचा सकते हैं।

### **क्रियाकलाप—**

प्रश्न— अस्थि विकलांगता के प्रकार का वर्णन करो।

प्रश्न— पोलियो अभियान की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।

### **गतिविधि —**

1. अपने आस पास के क्षेत्र के अस्थि विकलांग बच्चों को विद्यालय का महत्व बतलाइये और उन्हें विद्यालय में प्रवेश जाने के लिए प्रेरित कीजिए।
- 4.8 अस्थि विकलांगता के कारण —** वर्तमान समय में अत्याधिक दौड़ भाग के कारण तथा मिलावटी भोजन एवं अशुद्ध वातावरण तथा आधुनिक मशीनीकरण एवं प्रतिस्पर्धा तथा आपसी होड़ के कारण अस्थि विकलांगता बड़ी है या निरन्तर वृद्धि हो रही है जैसे-जैसे मनुष्य आजकल व्यस्त होता जा रहा है उसके कार्य करने का तरीका तथा प्रक्रिया में तेज गति से बदलाव आना प्रारम्भ हुआ है छोटे बच्चे एवं किशोर बालक एवं बालिकाएँ माता-पिता का कहना नहीं मानते हैं और उनकी आज्ञा का पालन भी नहीं करते हैं तथा उनकी कही हुई बात को नहीं सुनते हैं जिसके कारण उन्हें परेशानी का सामना करना पड़ता है वे स्वयं भी परेशान होते हैं तथा दूसरों को भी परेशान करते हैं, इस प्रकार से विकलांगता के कारणों में वृद्धि हुई है। मुख्य कारण के अलावा निम्न कारणों से भी। विकलांगता का स्तर बढ़ा है जैसे—

1. अस्थि विकलांगता अनुवांशिक तथा अअनुवांशिक भी है अनुवांशिकता के कारण भी विकलांगता आती है तथा कभी-कभी अअनुवांशिकता के द्वारा भी जैसे दुर्घटनाग्रस्त होने से विकलांगता आती है। आकस्मिक दुर्घटना हो जाने के कारण पैर में या कमर में गंभीर चोट पहुँचने के कारण विकलांगता का सामना करना पड़ता है बालक अपना जीवन आसानी से नहीं चलाकर परेशानियों से गुजारने लगता है और जीवन कठिन हो जाता है।
2. पैरों में कुरुपता के कारण – शरीर में विटामिन एवं प्रोटीन तथा अन्य रासायनिक पदार्थों की कमी के कारण एवं किसी भी गंभीर बीमारी के कारण पैरों में कुरुपता आ जाती है जिसके कारण बालक या व्यक्ति विकलांगता से ग्रसित हो जाता है यदि हमारे पैर ही स्वस्थ नहीं होंगे तो हम अपना जीवन ठीक से नहीं चला सकते हैं। अतः पैरों पर विशेष ध्यान देना चाहिए मधुमेह की बीमारी आज के समय में सभी की परेशानी बनी हुई है इसके कारण बच्चे युवा तथा बृद्ध सभी परेशान हैं अतः हमें समय-समय पर मधुमेह की जाँच करवाना चाहिए एवं अपने पैरों का विशेष ध्यान रखना चाहिए जिससे के हम पैरों को सुरक्षित रख सकें तथा किसी भी प्रकार की विकलांगता से ग्रस्त न हो सकें।
3. मांसपेशियों में पोषण की कमी के कारण – वर्तमान युग में सभी खाद्य पदार्थों में मिलावट पाई जा रही है, कोई भी पदार्थ हमें शुद्ध नहीं मिलता है और जो पोषक तत्व हमें मिलना चाहिए उसकी कमी हमारे शरीर में बनी रहती है यदि पोषण ठीक से नहीं होगा तो शरीर स्वस्थ नहीं होगा अतः पैरों तथा शरीर की मांसपेशियां विकृत हो जाती हैं और विकलांगता संभव हो जाता है पोषण हेतु हमें ठीक से भोजन लेना चाहिए और समय पर तथा उचित भोजन लेने से हमारा शरीर स्वस्थ रहता है स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का विकास होता है, भोजन को पौष्टिक तथा उचित खानपान से मांसपेशियों में उचित पोषण होता है तथा हमारे शरीर को पूर्णतः विटामिन मिलते हैं जिसके कारण हमारे शरीर की मांसपेशियां ठीक रहती हैं और विकलांगता नहीं आ पाता है।

4. पोलियो मायालिटीस ,ट्यूबरो क्लोसिस, लेप्रोसी, जोड़ों या हड्डियों में संक्रमण के कारण तथा मस्तिस्क में संक्रमण के कारण विकलांगता आती है पोलियो की दवाई समय से न पिलाने से पोलियो रोग से ग्रस्त होना पड़ता है मायालिटीस ट्यूबरो क्लोसिस, लोप्रोसी से भी विकलांगता आती है तथा हमारे शरीर की सभी नसे आपस में जुड़ी रहती है यदि बालक के मस्तिस्क में कोई संक्रमण आता है तो बालक विकलांगता से ग्रसित हो जाता है।
5. रीढ़ की इड़ड़ी संबंधी रोग – से विकलांगता आती है क्योंकि स्नायुगति हमारा जुड़ा होने की वजह से बालक को विकलांगता का सामना करना पड़ता है । दीर्घ स्थाई गठिया के कारण वह ठीक से चल नहीं पाता अपने स्वयं के कार्य नहीं कर पाता है जिसके कारण विकलांगता से ग्रसित होता है।
6. उच्चरक्तचाप के कारण बालक या व्यक्ति लकवाग्रस्त हो जाता है और इस वजह से उसके शरीर का एक भाग शिथिल हो जाता है और वह विकलांग हो जाता है। शरीर के एक हिस्से में शिथिलता आने के कारण उसको सामान्य होने की संभावना शून्य के बराबर रहती है उचित देखभाल तथा ठीक से उपचार के उपरांत भी वह अपना कार्य आसानी से नहीं कर पाता है उसे परेशानियों का सामना सदैव करना पड़ता है।
7. दुर्घटनाओं के कारण चोट लगने से – वर्तमान युग दौड़ भाग का युग है यातायात के साधनों के द्वारा सुविधा बड़ी है वही विकलांगता का प्रतिशत भी बढ़ा है आज के इस समय में बालिग और नाबालिग बच्चे भी वाहन तेजी से चलाते हैं और सड़क पर पैदल चलने वालों का ध्यान न रखकर वे अपना कार्य करने में दौड़ते रहते हैं जिसके कारण दुर्घटनाएँ अधिक हो रही हैं तथा दुर्घटना होने के कारण बच्चे विकलांग होते जा रहे हैं जिसके कारण उनका जीवन कठिनाई से गुजरता है और परेशानियों का सामना बच्चे के साथ-साथ परिवार के सभी सदस्यों को परेशानी का सामना करना पड़ता है।
8. कुपोषण प्रोटीन, कैलोरी तथा रक्त अल्पता यानि खून की कमी कुपोषण के कारण प्रोटीन, विटामिन तथा कैलोरी पोष्टिकता की कमी होने से शारीरिक

क्षमता धटती है तथा पूर्ण विकास नहीं हो पाता है जिसके कारण शरीर ठीक से काम नहीं करता है। बच्चे की सदैव बीमार होने का आस बना रहता है और वह शारीरिक कमजोरी को दूर नहीं कर पाता है तथा उसके शरीर में सदैव खून की कमी बनी रहती है जिसके कारण वह हमेशा परेशान रहता है और वह किसी न किसी प्रकार से विकलांगता से ग्रस्त रहता है जिसमें अस्थि विकलांगता मुख्य है।

9. मांसपेशियों व हड्डियों में दोष होने के कारण बालक में अस्थि विकलांगता आती है और यह बालक ठीक से चल फिर नहीं पाता है इसको तीन पहिये की साइकल तथा बैसाखी का सहारा लेना पड़ता है तब यह अपना थोड़ा कार्य कर पाता है।
10. स्नायुविक, स्नायुविरुपण के कारण बालक में विकलांगता आती है जिससे पैरों की मांसपेशियाँ कमजोर होती हैं और नसों में विरुपण के कारण कमजोर होती हैं तो वह ठीक से काम नहीं कर पाता है और वह विकलांगता से ग्रस्त होने से बालक का जीवन कठिन हो जाता है।
11. शरीर में ऑक्सीजन की कमी होने के कारण शरीर में विकलांगता आ जाती है— जब बच्चे का जन्म होता है तब उसको ऑक्सीजन ठीक से नहीं मिल पाती और ऑक्सीजन की कमी हो जाने के कारण उसको मानसिक रूप से कमजोरी आ जाती है और वह विक्षिप्त अवस्था के कारण ठीक से काम नहीं कर पाता तथा विकलांगता से ग्रसित हो जाता है। ऑक्सीजन हमारी प्राणवायु है इसी के द्वारा हमारा जीवन है यदि हम ठीक से सांस नहीं ले पाते तो हमारे शारीरिक अंगों का संतुलन ताल मेल बिगड़ जाता है इसके कारण—बालक विकलांगता से ग्रसित हो जाता है विषाक्त भोजन का सेवन करने से विकलांगता आती है क्योंकि शरीर में साधारण पाचन की क्रिया करनी होती है यदि हम ठीक से सादा भोजन करते हैं तो सब कुछ ठीक रहता है यदि हमारा खाना विषैला होता है तो उसका प्रभाव हमारे शरीर पर होता है तथा हमें बहुत

प्रकार की परेशानियों से गुजरना पड़ता है और हम विकलांगता से ग्रस्त हो जाते हैं।

12. ऐसी दवाइयों जिनका हमारे शरीर पर प्रतिकूल असर होता है इसके कारण बालक के शरीर में विकलांगता आती है जो दवाइयों हमारे अनुकूल होती है वह हमें फायदा पहुँची है परन्तु यदि दवाई का असर हमारे शरीर में प्रतिकूल होता है तो वह शरीर के किसी भी हिस्से की या पूरे शरीर की विकलांगता के लिए तैयार कर देती है तथा हमारा शरीर विकलांगता की ओर अग्रसर हो जाता है तथा विकलांगता आ जाती है।
13. शारीरिक अंगों में असमान्य कडापन तथा लचीलापन हो जाने के कारण विकलांगता आती है क्योंकि शरीर के किसी भी अंग में यदि ज्यादा कडापन आ जाता है तो वह ठीक से काम नहीं कर पाता है और उसमें हमेशा की तरह से कार्य करने की क्षमता खत्म हो जाती है और मनुष्य उस अंग से कार्य नहीं कर पाता है तथा हिला डुला नहीं पाता उसमें चेतना अवस्था नहीं रहती है इसी प्रकार से यदि अंग ज्यादा लचीला हो गया है तब भी वह सहज कार्य नहीं कर सकता है और उससे कार्य करना संभव नहीं होता है और विकलांगता आ जाती है।

#### 4.9 अस्थि विकलांगता के रोकथाम के उपाय – अस्थि विकलांगता को हम निम्नलिखित उपायों के द्वारा रोक सकते हैं।

1. दुर्घटनाओं से बचाव करके हम अस्थि विकलांगता से बचाव कर सकते हैं आराम से या आहिस्ता से किया गया कार्य आपको दुर्घटना से बचाता है और हमारे शरीर में हानि होने से बचाता है यदि हम ध्यान से और शांति पूर्वक किसी कार्य को करते हैं तो हमारे किए गए कार्य के परिणाम उचित होंगे और हमें किसी भी प्रकार की हानि नहीं होगी। यदि हम हड़बडाहट तथा बेचने में किसी कार्य को करते हैं तो हमें परेशानी का सामना करना पड़ता है अतः शांति पूर्वक किया गया कार्य किसी भी प्रकार की दुर्घटना से बचाता है तथा हमारा शारीरिक नुकसान नहीं हो पाता और हम किसी भी प्रकार की दुर्घटना से अपने आप को सुरक्षित रखते हैं।
2. समान रक्त संबंधों के बीच विवाह को रोकना – समान रक्त संबंधों में विवाह होने से आने वाली संतान याने उनके द्वारा किसी भी बच्चे का जन्म होता है तो उसके विकलांग होने की संभावना अत्यधिक रहती है, तो इस कारण से समान रक्त संबंधों में विवाह नहीं किया जाता है। आज का युग आधुनिक युग है इसमें पहले ब्लडग्रुप चेक करके शादी की जाती है जिससे आने वाले बच्चों को किसी भी प्रकार की तकलीफ न उठाना पड़े और वह स्वस्थ तथा मस्त अपना जीवन यापन कर सके इस हेतु शारीरिक देखभाल के साथ-साथ ब्लड चेकअप खून की जांच अति आवश्यक है जिससे हम विकलांगता को रोक सकते हैं।
3. बच्चे के जन्म के पहले गर्भवती माता की पूर्णतः देखभाल होना चाहिए जिससे बालक का शरीर पूर्णतः स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट रहे जिससे वह किसी प्रकार की विकलांगता से ग्रसित न हो सके इसके लिए माता को पौष्टिक भोजन उचित वातावरण तथा हमेशा स्वस्थ रहे इसके लिए उचित देखभाल मासिक रूप से टीकाकरण एवं चिकित्सकीय जांच पूर्णतः होनी चाहिए इस प्रकार से बच्चे को विकलांगता से बचाया जा सकता है।

4. समय—समय पर टीकाकरण बच्चों को याने नवजात शिशु को देने से लगाने से बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढती है तथा उसे अस्थि विकलांग होने का खतरा नहीं रहता है। इसलिए माता—पिता को चाहिए कि वे अपने जन्म नवजात शिशु को समय—समय पर टीका लगवाए तथा उसका पूरा विवरण रखे जिससे उसकी आयु अनुसार टीकाकरण किया जा सके और विकलांगता से बचाया जा सके। इस प्रकार से उचित देखभाल करने से बच्चे की शारीरिक स्थिति में सुधार रहता है तथा विकलांगता का खतरा बिलकुल भी नहीं रहता है।
5. यदि बालक को किसी भी प्रकार की बीमारी हो तो उसे तुरन्त उपचार कर खत्म करना चाहिए क्योंकि यदि बीमारी पड़ती है तो वह अपने साथ—साथ शरीर के अन्य अंगों पर भी प्रभाव डालती है इस हेतु शारीरिक शक्तियों को बनाए रखने हेतु समय—समय पर बालक को चिकित्सकीय परामर्श हेतु पास के अस्पताल तथा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र ले जाकर उसका उपचार करवाना चाहिए और परामर्श द्वारा उसे उचित प्रोटीन विटामिन अन्य शारीरिक वृद्धि हेतु इलाज तथा अन्य दवाईयां लेनी चाहिए जिससे बच्चा स्वस्थ तथा निरोगी रहे और उसको किसी भी प्रकार की विकलांगता नहीं आ सके।

इस प्रकार से हम बच्चे को स्वस्थ तथा निरोगी रख सकते हैं व उसकी शारीरिक मानसिक, बौद्धिक क्षमता में वृद्धि कर सकते हैं जिससे बालक आज के वर्तमान समय के साथ ठीक से अपना समाज के साथ सामंजस्य स्थापित कर सके तथा अपने जीवन को सुचारु रूप से चला सके तथा सभी प्रकार की प्रतियोगिताओं को पूर्ण रूप से पूराकर सफल हो सके इस हेतु बालक का स्वस्थ होना अति आवश्यक है इसलिए हम बच्चे के स्वास्थ्य हेतु पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

6. बालक के स्वास्थ्य हेतु समय—समय पर ध्यान देना चाहिए इसलिए चिकित्सक के द्वारा बच्चों के स्वास्थ्य की जांच करवाना चाहिए तथा चिकित्सकीय परामर्श लेना चाहिए, उसी के अनुसार बच्चों को भोजन में पौष्टिक आहार देना चाहिए



जिसमें विटामिन प्रोटीन कार्बोहाइड्रेट, वसा, लवण, खनिज तत्व पोषक तत्व होना चाहिए जिससे बच्चे का शारीरिक एवं मानसिक विकास आसानी से हो सके।

7. अस्थि विकलांगता से बचाव के लिए बच्चे की देखभाल हमें शैशवावस्था से याने जन्म के तुरन्त बाद से ही रखना चाहिए जिससे कि बालक के सभी अंग पूर्ण रूप से विकसित हो सके क्योंकि यदि बालक किसी गंभीर या सामान्य बीमारी से ग्रसित होता है तो उसका शारीरिक विकास प्रभावित होता है और वह शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर हो जाता है अतः हमें बालक के जन्म के तुरन्त पश्चात समय-समय चिकित्सकीय जांच करवा कर परामर्श लेना चाहिए एवं चिकित्सक की सलाह को याने दिए हुए निर्देशों का पालन करना चाहिए जिससे कि बालक की किसी भी प्रकार की गंभीर बीमारी से बचा जा सके और विकलांगता से बालक का बचाव किया जा सके। शिशु की हड्डियों की मजबूती के लिए उसके हाथ पैरों की मालिश दाईं से करवाना चाहिए जिससे उसकी हड्डिया मजबूत हो सके साथ-साथ हल्की कसरत भी करवाना चाहिए।
8. बच्चे के जन्म के समय होने वाली विकलांगता को रोकने के लिए गर्भावस्था के दौरान उसकी माता का पूर्णतः ध्यान रखना चाहिए जैसे-माता के भोजन में पौष्टिक आहार, उचित देखभाल, समय-समय पर टीकाकरण, शारीरिक स्वास्थ्य के लिए चिकित्सालय तथा सामुदायिक केन्द्र तथा आंगनबाड़ी में जाँच करवाना चाहिए तथा माता के मानसिक स्वास्थ्य हेतु आसपास तथा घर का वातावरण स्वस्थ होना चाहिए। माता को अनुकूल वातावरण प्रदान करना चाहिए। आसपास तथा पड़ोस में भी अच्छा वातावरण होना चाहिए, जिस कमरे में माता रहती है उस कमरे में भी अच्छे चित्र लगाना चाहिए जैसे- महापुरुषों के देवताओं के प्राकृतिक चित्रण तथा माता के स्वयं के आदर्शों तथा बाग बगिचों के लगाना चाहिए जिससे कि माता के मन में खुशी का वातावरण हमेशा बना

रहे व हमेशा प्रसन्नचित रहे तथा अन्य विपरीत या गलत बातों का विचार माता के मन में न आ सके।

वंशानुक्रम एवं वातारण यदि वंशानुक्रम से अस्थि विकलांगता परिवार में है तो उसे माता को अनुकूल वातावरण तथा स्वस्थ भोजन आहार देकर वंशानुक्रमणीयता को कम किया जा सकता है।

### **क्रियाकलाप –**

प्रश्न– अस्थि विकलांगता की रोकथाम हम किस प्रकार कर सकते हैं विस्तृत में लिखो।

प्रश्न– अस्थि एवं गत्यात्मक बच्चों के हम किस प्रकार सहायक बन सकते हैं बताइये।

### **गतिविधि:–**

अस्थि विकलांग बच्चे को अन्य विकलांगता से ग्रस्त लोगो की जीवनी के बारे में वर्णन करिये तथा उनके क्रियाकलापों का विस्तृत में वर्णन करिये।

### **4.10 अस्थि विकलांग बच्चों की शिक्षा:–**

शारीरिक विकलांगता के कारण ये बालक सामान्य बालकों क समान कार्य करने में पूर्ण रूप से सक्षम नहीं होते इस बात का शिक्षकों व विद्यालय प्रबंधन को विशेष ध्यान रखना चाहिए तथा इन्हे सामान्य बालकों के साथ शिक्षा देने के साथ इनकी शारीरिक विकलांगता को ध्यान में रखते हुए विशेष शैक्षिक कार्यक्रम भी बनाए जाने चाहिए।

शैक्षिक कार्यक्रम बनाते समय निम्न बिन्दुओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए–

1. शारीरिक अपंगता के अनुरूप शैक्षिक पाठ्यक्रम का चयन:– विकलांगता के प्रकार को देखते हुए शैक्षिक कार्यक्रमों का चयन किया जाना चाहिए जिस बच्चे के हाथ ठीक से कार्य नहीं करते हैं तो उसे पैरों से बाधित बच्चे से अलग पाठ्यक्रम द्वारा सिखाया जाना चाहिए।
2. सांवेगिक समायोजन एवं सुरक्षा प्रदान करना – शारीरिक विकलांगता के कारण कभी-कभी बालक का सामाजिक एवं सांवेगिक समायोजन बिगड जाता

है अतः पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधिया बनाते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जाना चाहिए कि इनका सावेगिक समायोजन, आत्मविश्वास व आत्मनिर्भरता की भावना बनी रहे एवं विकसित होती रहे तथा हीन एवं निराशाजक भावों का उन्मूलन हो।

3. शारीरिक दक्षता विकसित करना – ऐसे बालक के अंदर आत्मविश्वास की भावना को इस प्रकार जागृत किया जाए जिससे कि वह अपनी शारीरिक अपंगता पर विजय प्रयत्न कर सके एवं कृत्रिम अंगो को लगाकर उनका उचित प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए जिससे कि वह सामान्य बालक की भांति कार्य कर सके।
4. शैक्षिक एवं संतुलित विकास करना – इन बालकों को व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ साथ सैद्धांतिक विषयों की भी शिक्षा दी जानी चाहिए।
5. चिकित्सा सुविधा प्रदान करना – शारीरिक विकलांगता का निदान चिकित्सा द्वारा करके ही बालक को सामान्य जीवन जीने की ओर प्रेरित किया जा सकता है।
6. अस्थि विकलांग बच्चों की शिक्षा व्यवस्था अन्य सामान्य विकलांग बच्चों के साथ की जानी चाहिए जिससे वे आसानी से आत्मनिर्भर हो सके तथा अपना अध्ययन अध्यापन सुचारु रूप से हो सके।

प्रजातंत्र की सफलता के लिए समाज की उन्नति के लिए मानवीयता के नाते तथा तीव्र एवं निश्चित दिशा में आगे बढ़ने के लिए तथा समाज में परिवर्तन लाने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है इसके लिए जन-जन शिक्षित हो तभी शिक्षा से हमारे राष्ट्र का विकास होगा इसलिए आवश्यक है कि सभी को समान शिक्षा के अवसर प्राप्त हो सभी के लिये शिक्षा इसमें समाज के सभी वर्ग शामिल है बिना किसी भेदभाव के शिक्षा अनिवार्य रूप से हो सभी को समान अवसर मिले इसके लिए निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना अतिआवश्यक है :-

1. व्यापक मात्रा में छात्रवृत्ति की व्यवस्था की जाये जिससे विकलांग बच्चों को पूरा लाभ मिले।

2. शिक्षा का गुणात्मक तथा संख्यात्मक दोनों ही प्रकार से प्रचार प्रसार किया जाये।
3. विकलांग शिक्षा के क्षेत्र में विशेष प्रयास किये जाये।
4. विशेष बच्चों के लिए विद्यालयों की उनके रहवासी के समीप स्थापना की जाय, जिससे वे आसानी से विद्यालय आ सकें।
5. विशेष बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरणा दी जाये जिससे वे ज्यादा से ज्यादा अभ्यास करने के लिए प्रेरित हो।
6. सभी बच्चों को निःशुल्क शैक्षिक सामग्री दी जाये गणवेश व उनके विद्यालय तक आने जाने की व्यवस्था की जाये।
7. सभी बच्चों को उपस्थिति के आधार पर पारितोषिक दिया जाय जिससे वे उमंग व उत्साह के साथ विद्यालय में प्रवेश लेकर अपनी शिक्षा ठीक से पूर्ण करें।

#### **क्रियाकलाप :-**

प्रश्न— शासन द्वारा कौन कौन सी सुविधाएं अस्थि विकलांगता को प्रदान की जा रही है वर्णन करिए।

प्रश्न— किस प्रकार से हम शिक्षा में उनकी सहायता कर सकते हैं बताइये।

प्रश्न— सभी के लिए समान शिक्षा से क्या तात्पर्य है।

प्रश्न— समेकित शिक्षा का क्या अर्थ है? समझाइये।

#### **गतिविधि :-**

अपने आस-पास के क्षेत्र के अस्थि विकलांग बच्चों की सूची बनाइये वे किस प्रकार विद्यालय जाते हैं तथा उनकी शैक्षिक समस्याओं को आप कैसे दूर करेंगे।

अस्थि विकलांग बच्चों की शिक्षा — अस्थि विकलांगता से युक्त बच्चों को इस प्रकार की शैक्षिक व्यवस्था होनी चाहिए जिससे वे स्कूल विद्यालय में प्रवेश करने हेतु उत्सुक हो तथा स्वेच्छा से प्रवेश ले इसलिए भौतिक सुविधाओं का ध्यान रखते हुए भवन निर्माण ठीक से करवाया जाना चाहिए ताकि गत्यात्मक विकलांग विद्यार्थी आसानी से

शाला में प्रवेश कर सके और उन्हें शारीरिक रूप से किसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े और आसानी से वे अपना अध्ययन सुचारु रूप से चला सकें।

### **समेकित शिक्षा की व्यवस्थानुसार :—**

अस्थि विकलांग बच्चों को इस प्रकार शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे वे बुद्धिमान, भावुक रूप से मजबूत निश्चयात्मक, खुश रहना, ईमानदार, स्वशासी, संदेही, समझदार, ग्रहणशील, प्रयोगकर्ता, स्वयं संतुष्टी एवं नियंत्रक तथा समय के पाबन्द एवं कल्पनाशील बन सकें। इस के लिए इन बच्चों का पाठ्यक्रम आधारित शिक्षा दी जानी चाहिए जो व्यवहारिक शिक्षा अर्थात् प्रेक्टीकल पर आधारित हो तथा सैद्धान्तिक हो जिससे बच्चे अपने जीवन को सरल व उचित तरीके से पूर्ण कर सकें।

बच्चों को इस प्रकार शिक्षित किया जाय जिससे वे सृजनात्मक बन पायें तथा उनमें कल्पनाशीलता का विकास हो और अपनी कल्पना को वे साकार रूप दे सकें।

बच्चों को इस प्रकार की शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे उनमें समायोजन की भावना का विकास हो अस्थित विकलांग बच्चे अपने आप को अलग-अलग मानकर ठीक से सामान्य बच्चों के साथ घुल मिल नहीं पाते हैं। अतः उनमें समायोजन शीलता उत्पन्न हो सके इसलिए पाठ्यक्रम इस प्रकार बनाया जाय जिससे वे आसानी से पढ़कर समायोजन कर सकें अन्य सहपाठियों के साथ।

सामाजिक दृष्टिकोण से भी इन बालकों की शिक्षा व्यवस्था का हमारा कर्तव्य है बनता है कि एक जागरूक भारतीय नागरिक होने के नाते हम विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान देते हुए उन्हें शिक्षा के प्रति रुचि तथा सजगता जगायें जिससे उनमें जीविकोपार्जन करने की क्षमता का विकास हो सके। ऐसी व्यवस्था बनायें जिससे इन बच्चों में सामान्य बच्चों की तरह आगे बढ़ना तथा पढ़ना याने निरन्तर अध्ययन करने की क्षमता का विकास हो और ये बच्चे समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकें और अपना कार्य सुचारु रूप से करते हुए अपने जीवन यथोचित चला सकें तथा जीवन में उस उत्पन्न कर सकें। निराशा की भावना इनमें नहीं आने पाये ओर हमेशा उन्नति के पथ पर आगे बढ़ सकें।

ऐसी शिक्षा की व्यवस्था हमें करनी चाहिए जिससे इनमें बालकों में भिक्षावृत्ति अनैतिक कार्य, गलत आदतों का जन्म नहीं होने पाये और ये बच्चे अपनी दुर्बलता को कमजोरी न बनाते हुए ठीक से अध्ययन कर समाज की मुख्यधारा से जुड़ सकें।

इस प्रकार से बच्चों को शिक्षित किया जाय जिससे वे समाज को पूर्ण सहयोग देकर अपना स्थान सुनिश्चित करवा सकें। समाज पर बोझ न बनकर वह अपना सहयोग देकर सहयोगी बन सकें। सामान्य बालकों के साथ विशेष कक्षा की व्यवस्था कर इन्हें यदि पढ़ाई में कमजोर विद्यार्थी हैं तो उपचारात्मक कक्षाएं लगाकर पढ़ाना चाहिए जिससे वे आसानी से अपने पढ़ाई के स्तर को ऊँचा कर सकें पढ़ सकें और आगे बढ़ सकें।

विशेष बच्चों के माता-पिता बड़े भाई बहन के साथ शिक्षक तथ सहपाठियों का व्यवहार प्रेम पूर्वक होना चाहिए जिससे बच्चे में सहयोग की भावना उत्पन्न हो तथा वे अपने आप को अलग न समझ कर सबके साथ रहने का प्रयास करें। शिक्षकों को चाहिए कि बच्चे की शारीरिक अक्षमता को देखते हुए उससे वे कार्य नहीं करवाना चाहिए जिससे उनको कार्य करने में कठिनाई हो और उनमें हीन भावना आये इसलिए उनके इस प्रकार के कार्य करवाना चाहिए जिसमें उनकी शारीरिक अक्षमता बाधक न हो और वे आसानी से उस कार्य को पूर्ण कर सकें और ठीक से सुचारु रूप से कार्य कर सकें इस हेतु हमें निरन्तर प्रयास करना चाहिए और बच्चों का उत्साहवर्धन कर आगे बढ़ाते रहना चाहिए, जिससे वे आने-वाले समय में अच्छे उपन्यासकारित कहानीकार, संगीतज्ञ तथा साहित्यिक तथा अविष्कारक बन सकते हैं।

शिक्षा व्यवस्था ऐसी होना चाहिए जिससे इन बच्चों को व्यवसायिक दक्षता प्राप्त हो सके जैसे कताई, बुनाई, चित्रकारी, मशीन पर काम करना, सिलाई करना, लेप मशीन पर कार्य करना, पेपर कटिंग करना, कढ़ाई करना आदि।

बच्चों को शिक्षा के अंतर्गत अवकाश के समय सदुपोग कर विद्यार्थी संगीत, कला, योग, ध्यान कर सकें तथा अपने शरीर को अनुकूल बना सकें उनमें इस प्रकार से शारीरिक क्षमता उत्पन्न हो जिससे वे अपने आप को पृथक् न मानकर ठीक से अपना कार्य कर सकें व सभी के साथ अपना जीवन व्यापन सकें।

#### 4.11 संदर्भ ग्रंथ :-

- अहमानन स्टेनली जे (1962) “दृष्टिबाधित किशोरों का मनोसामाजिकरण” साइकोलिंग्वा एसोसिएशन ऑफ इंडिया, आगरा
- एनस्को एम. (1994) “स्पेशल नीड्स इज द क्लासरूम” ए टीचर एज्यूकेशन गाइड किंग्सले : यूनेस्की
- कौशिक ब्रा.ना. (1997) “विकलांग शिक्षा सिंधु” राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी: जयपुर
- गुड बी.सी. (1973) “डिक्शनरी ऑफ एज्यूकेशन” मेग्रा हिल बुक के: न्यूयार्क
- गुप्ता एस.के. (1989) “ अ स्टडी ऑफ स्पेशल नीड्स प्रोविजन फॉर द एज्यूकेशन ऑफ चिल्ड्रन विद विजुवल हैण्डिकेप्स इन इंग्लैण्ड एंड वेल्स एंड इन इंडिया एसोसिएशनशिप स्टडी, इंस्टीट्यूट ऑफ एज्यूकेशन लंदन।
- चांद किरण (2005) “शिक्षा समाज और विकास” कनिष्ठ पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स: नई दिल्ली
- चौहान एस.एस. (1979) “इनोवेशन्स इन टिचिंग एण्ड लर्निंग प्रोसेस” विकास पब्लिशिंग हाउस: कानपुर
- पाण्डेय, रामशकल (2003) “उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक” विनोद पुस्तक मंदिर: आगरा
- भार्गव, महेश (2011) “विशिष्ट बालक शिक्षा एवं पुनर्वास” राखी प्रकाशन: आगरा